ढूंढाड़ का नामकरण

—राघवेन्द्र मनोहर
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

जयपुर के आसपास का क्षेत्र ढूंढाड़ के नाम से विख्यात् रहा है। इस इलाके का यह नाम कब और क्यों पड़ा इस बारे में कोई सुनिश्चित जानकारी नहीं मिलती। ऐतिहासिक साक्ष्य के अभाव में इसके नामकरण के सम्बन्ध में विभिन्न संभावनाओं पर विचार करना समीचीन होगा।

सर्वप्रथम वंश भास्कर ने एक जनश्रुति का उल्लेख किया है कि चौहान नरेश बीसलदेव अपने दुराचरण के कारण शापित हो ढुंढ नामक राक्षस बन गया तथा प्रजाजनों का भक्षण करने लगा। वह अजमेर को उजाड़ कर ईशानकोण में स्थित जीबनेर कस्बे की ओर उन्मुख हुआ तथा वहाँ पर्वत शृंग पर उकड़ू बैठकर नर-भक्षण करने लगा।

खाय मनुज उतके सुखल, ईस कोन दिस ओर।
जुब्बनेर पुर लों जबहि, रहयो मचावत शोर॥
उतके जन रवावत अटल, कबहु श्रांत अतिकाय।
जुब्बनेर गिरि शृंग जो उकरु बैठत आय॥[1]

अजमेर में बीसलदेव (विग्रहराज) नाम के चार राजा हो गये हैं। संभवतः उक्त बीसलदेव विग्रहराज तृतीय ही हैं क्योंकि वह स्त्रीलम्पट और दुराचारी था। वंश भास्कर के अनुसार उस ढूंढ राक्षस के नाम पर ही उसके विचरण क्षेत्र का नाम ढूंढाड़ विख्यात हुआ :

आमैर सों दिस वारुनी, अजमेर सों सिव ओर में।
ढुंढार नामहि देस भी, यह ढुंढ ढुंढन दौर में॥

बीसलदेव विषयक इस जनश्रुति का यही आशय लगता है कि वह अपनी दुष्टता एवं दुराचरण के कारण निरीह प्रजाजनों पर अत्याचार करने लगा होगा जिससे यह प्रदेश उजाड़ हो गया तथा लोक में वह राक्षस संज्ञा से अभिहित हो गया।

रावल नरेन्द्र सिंह ने ब्रीफ हिस्ट्री आफ जयपुर नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जीबनेर पर्वत का नाम ढूंढ है जहाँ अजमेर के चौहान नरेश बीसलदेव ने अपने विरोधियों (प्रमुखतः मेवासी मीणों) को ढूंढ़-ढूंढ़ कर समाप्त करने के लिए मुकाम किया था।

इस प्रकार जहाँ रावल साहब का मत है कि जीबनेर पर्वत का नाम ढूंढ था वहीं दूसरी ओर वंश भास्कर के अनुसार राक्षस का नाम ढूंढ था (व्यक्तियों को ढूंढ-ढूंढ कर खाने के कारण)। इस सम्बन्ध में वंश भास्कर में स्पष्ट उल्लेख है :

सब जन खाये ढुंढि सठ, इहि कारण अभिधान।
रक्खस को ढुंढहि रहयो, बस्यो उतहि बलवान॥

तथा,

जुब्बनगर दै दाहिनै, अवनि उद्धरन आस।
अन्नल नृप अजमेर बन, पत्तो रक्खस पास॥
जुब्बनैर अजमेर बिच, देस विरच्चि उद्यान।
ढुंढ तहां ढुंढत रहै, प्राणिन पालन प्राण॥

हनुमान शर्मा ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ नाथावतों के इतिहास में आमेर के ढुंढाकृति पहाड़ के नाम से ढूंढाड़ नाम पड़ने की बात कही है पर इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता।

एक पौराणिक मान्यता के अनुसार ढुंढा नामक एक राक्षसी (हिरणकश्यप की बहिन) थी जो इस क्षेत्र में

[1] वंश भास्कर, पृ० १३०३-४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहती थी। उसका विचरण क्षेत्र होने से संभवतः यह इलाका ढूंढाड़ कहलाया हो। नवजात शिशुओं की मंगल कामना के लिए ढूंढ पूजने की रीति आज भी इस क्षेत्र में प्रचलित है। लेकिन इस मान्यता का कोई ऐतिहासिक आधार नहीं मिलता।

भाषा विज्ञान की दृष्टि से देखें तो पाते हैं कि ढूंढाड़ शब्द राजस्थानी की विभिन्न बोलियों में निर्जन और उजाड़ प्रदेश के अर्थ में अनेकशः आया है। संभवतः वीरान् इलाका होने के कारण यहाँ जीवन-यापन करना दुष्कर रहा हो इसीलिए इसे विविध राक्षसों के विचरण का प्रदेश मानकर अनेक असंगत व निराधार मान्यतायें बना ली गई।

गाजर मेवो कांस खड़, मरद ज पून उघाड़।
अंधै ओझर अस्तरी, अेहो घर ढूंढाड़॥
ढूंढाड़ देस राक्षस धरा, दई वास नह दीजिए।

इस मान्यता में भी ज्यादा दम नहीं है क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से यह इलाका इतना निर्जन और वीरान कभी नहीं रहा।

ढूंढाड़ नाम से यह क्षेत्र लगभग तीन-चार सौ वर्षों से लोक में ज्ञात है। लिखित प्रमाण भी इससे पहले नहीं ले जाते। लेकिन इसके नामकरण के बारे में फिर भी यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह नाम कब और क्यों पड़ा।

ढूंढाड़ क्षेत्र के नामकरण के पीछे सबसे अधिक युक्ति-संगत और विश्वसनीय बात यह लगती है कि अचरोल के निकटवर्ती पहाड़ों से निकलने वाली इस क्षेत्र की प्रमुख नदी का नाम ढूंढ है। यह नदी इस इलाके के व्यापक और विस्तृत भू-भाग में बहती है। वह काफी पुरानी है और इसका पाट बहुत चौड़ा है। अभी कुछ वर्ष पूर्व १९८१ में ढूंढ नदी में आयी भीषण बाढ़ ने प्रलय का कैसा ताण्डव किया था! उसकी विनाश लीला ने इस इलाके के कई सौ गाँवों अर्थात् एक बहुत बड़े क्षेत्र को प्रभावित किया। बहुत सम्भव है ढूंढ नदी के प्रवाह क्षेत्र का बोध कराने की दृष्टि से इस भू-भाग का नाम ढूंढाड़ पड़ गया हो। पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में ढूंढाड़ के नामकरण का यही सबसे विश्वसनीय कारण लगता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org